डॉ. पी. एस. पाटील,
अध्यक्ष, हिंदी विभाग,
शिवाजी विश्वविद्यालय,
कोल्हापुर-४१६ ००४.

- संस्तुति -

मैं संस्तुति करता हूँ कि श्री कलंदर बाबू मुल्ला का "शंकर शेष के बंधन अपने-अपने नाटक का समीक्षात्मक अध्ययन" लघु शोध-प्रबंध परीक्षणार्थ अग्रेषित किया जाए ।

कोल्हापुर ।

तिथि : 14·09·1996

अध्यक्ष
हिन्दी विभाग,
शिवाजी विश्वविद्यालय,
कोल्हापुर – ४१६ ००४

.....

प्राचार्य डॉ. आनंद वास्कर,
आचार्य जावडेकर शिक्षणशास्त्र
महाविद्यालय,
गारगोटी ।

तिथि : 14.09.1996

- प्रमाणपत्र -

मैं प्रमाणित करता हूँ कि श्री कलंदर बाबू मुल्ला ने मेरे निर्देशन में "शंकर शेष के 'बंधन अपने-अपने' नाटक का समीक्षात्मक अध्ययन" लघु शोध-प्रबंध, शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर की एम्. फिल. [हिंदी] उपाधि के लिए लिखा है। यह कार्य पूर्व योजनानुसार संपन्न हुआ है और इसमें शोध-छात्र ने मेरे सुझावों का पूर्णत: पालन किया है। जो तथ्य लघु शोध-प्रबंध में प्रस्तुत किए हैं, मेरी जानकारी के अनुसार सही हैं। शोध छात्र के कार्य से मैं पूर्णत: संतुष्ट हूँ।

गारगोटी ।

शोध-निर्देशक,

तिथि : 14.09.1996

[प्राचार्य डॉ. आनंद वास्कर]

.....

- प्रख्यापन -

"शंकर शेष के 'बंधन अपने-अपने' नाटक का समीक्षात्मक अध्ययन" लघु शोध-प्रबंध मेरी मौलिक रचना है, जो एम. फिल. [हिंदी] उपाधि के लिए प्रस्तुत की जा रही है। यह रचना इससे पहले शिवाजी विश्वविद्यालय या अन्य किसी विश्वविद्यालय की उपाधि के लिए प्रस्तुत नहीं की गयी है।

कोल्हापुर ।

शोध-छात्र,

तिथि : 14-09-1996

[श्री कलंदर बाबू मुल्ला]

.....

प्राक्कथन

डॉ. शंकर शेष का स्वातंत्र्योत्तर हिंदी नाटक साहित्य के विकास में महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है। उन्होंने हिंदी नाटक को विविध आयामों द्वारा - चाहे रंगमंच हो, दूरदर्शन हो अथवा आकाशवाणी हो प्रतिष्ठा देने की भरसक कोशिश की है। साथ ही नाट्य लेखन, निर्देशन एवं मंचन आदि क्षेत्रों में उन्होंने प्रयोगशील भूमिका अपनायी है। लेकिन हिंदी साहित्य के इतिहास में डॉ. शंकर शेष नाटककार के रूप में ही जाने पहचाने जाते हैं। "बंधन अपने-अपने" उनका शिक्षा-व्यवस्था पर आधारित आधुनिक नाटक है। जो नाट्य प्रतियोगिता के लिए लिखी हुयी उनकी दूसरी नाट्य कृति है। प्रस्तुत लघु शोध-प्रबंध का विषय और उद्देश्य है कि आधुनिक शिक्षा व्यवस्था में चल रही कुप्रथाएँ भ्रष्टाचार तथा हर व्यक्ति की अपनी सीमा तथा बंधन होते हैं आदि का स्पष्ट चित्रण करना।

एम.ए. भाग दो में पढ़ते समय नाटककार शंकर शेष का "एक और द्रोणाचार्य" नाटक ने मुझे अत्यधिक प्रभावित किया, जिससे नाटक पढ़ने की रुचि बढ़ती गयी। उसके बाद मूर्तिकार, रक्तबीज, पंछी, खजुराओं का शिल्पी, बंधन अपने-अपने आदि नाटकों को बड़ी लगन से पढ़ा। इन नाटकों में से "बंधन अपने-अपने" नाटक की गहरायी ने मुझे अत्यधिक प्रभावित किया। इस प्रभाव के परिणाम स्वरूप मैंने यह तय किया कि मैं शंकर शेष के "बंधन अपने-अपने" नाटक पर ही एम्. फिल. करूँगा। मैंने अपने श्रद्धेय गुरुवर्य तथा शोध-निर्देशक प्राचार्य डॉ. आनंद वास्करजी, श्रद्धेय डॉ. पी.एस. पाटीलजी तथा श्रद्धेय डॉ. अर्जुन चव्हाणजी से विचार-विमर्श करने के उपरांत शंकर शेष के "बंधन अपने-अपने" नाटक पर अपना शोधकार्य आरंभ किया।

शंकर के व्यक्तित्व और कृतित्व पर अबतक निम्नांकित शोधकर्ताओं ने एम. फिल. तथा पी-एच. डी. के लिए शोध-कार्य किया है।

पी-एच. डी. :-

[१] डॉ. शंकर शेष के नाटकों का अनुशीलन - डॉ. मधुकर हसमनीस [शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर के लिए प्रस्तुत शोध-प्रबंध]।

[२] डॉ. शंकर शेष के साहित्यिक विषयों और शिल्पविधियों का अनुशीलन - - डॉ. एस. पी. जाधव -
[शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर के लिए प्रस्तुत शोध-प्रबंध]

[३] डॉ. शंकर शेष का नाटक साहित्य - डॉ. प्रकाश जाधव -
[डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर मराठवाडा विश्वविद्यालय, औरंगाबाद के लिए प्रस्तुत शोध-प्रबंध]।

अन्य ग्रंथ :-

[१] नाटककार शंकर शेष - डॉ. सुनीलकुमार लवटे।

[२] राजपथ से जनपथ - नटशिल्पी शंकर शेष - डॉ. वीणा तथा सुरेश गौतम।

[३] रंगधर्मी नाटककार शंकर शेष - डॉ. प्रकाश जाधव।

एम. फिल. :-

[१] डॉ. शंकर शेष के "चेहरे" नाटक का समीक्षात्मक अध्ययन - शोभा नाईक [शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापूर के लिए प्रस्तुत लघु शोध-प्रबंध]।

[२] डॉ. शंकर शेष के "एक और द्रोणाचार्य" नाटक का समीक्षात्मक अध्ययन - पुष्पा लोखंडे - [शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापूर के लिए प्रस्तुत लघु शोध-प्रबंध]।

[३] डॉ. शंकर शेष के "घरौंदा" नाटक का "कथ्य और शिल्प" - शिवाजी पोवार - [शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापूर के लिए प्रस्तुत लघु शोध-प्रबंध]।

[४] डॉ. शंकर शेष के "पंछी" नाटक में चित्रित समस्याएँ - श्री दिपककुमार फसाले [शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर के लिए प्रस्तुत लघु शोध-प्रबंध]।

शंकर शेष के "बंधन अपने-अपने" नाटक को लेकर अभीतक कोई कार्य नहीं हुआ है। इसलिए मैंने अनुसंधान के लिए "बंधन अपने-अपने" नाटक का समीक्षात्मक अध्ययन विषय चुना है। जिज्ञासा हर खोज की जननी है। इसी जिज्ञासा को लेकर ही मैंने अपना कार्य आरंभ किया। तब जिन प्रश्नों का उत्तर प्राप्त करने के लिए मैं यह लघु-शोध कार्य पूरा करने में व्यग्र और व्यस्त रहा वे इस प्रकार हैं -

[१] क्या शंकर शेष के व्यक्तित्व की छाप उनके कृतित्व पर दिखायी देती है ?

[२] क्या नाटक में आधुनिक शिक्षा-व्यवस्था में चल रहे भ्रष्टाचार तथा कुप्रथाओं का चित्रण करने में नाटककार सफल हुये हैं ?

[३] "बंधन अपने-अपने" नाटक का उद्देश्य क्या है ?

मैंने इन प्रश्नों के उत्तर अनुसंधान की उपलब्धियों के रूप में उपसंहार में दिये हैं। अध्ययन की सुविधा की दृष्टि से मैंने प्रस्तुत विषय को निम्न अध्यायों में विभाजित किया है -

प्रथम अध्याय :- "शंकर शेष के व्यक्तित्व और कृतित्व का परिचय"

के अंतर्गत मैंने शंकर शेष का जीवन परिचय, जन्मस्थान, परिवार, बचपन, शिक्षा, व्यवसाय, मृत्यू, महान व्यक्तित्व, चारित्र्य संपन्न, विनम्र, पुस्तकप्रेमी, चिंतनशील व्यक्तित्व, श्रेष्ठ प्रशासक, आदर्श अध्यापक, मिलनसार, आशावादी प्रसिद्धि विन्मुख आदि व्यक्तित्व के पहलुओं पर प्रकाश डाला है। उनके कृतित्व के अंतर्गत नाटककार, उपन्यासकार, एकांकीकार, अनुवादक, अनुसंधानकर्ता आदि पक्षों का विवेचन किया गया है।

द्वितीय अध्याय :- "शंकर शेष के "बंधन अपने-अपने" नाटक का तात्त्विक विवेचन"

प्रस्तुत अध्याय में "बंधन अपने-अपने" नाटक का नाटक के तत्त्वों के आधार पर विवेचन किया है। कथावस्तु, पात्र एवं चरित्र-चित्रण, कथोपकथन देश-काल-वातावरण, भाषाशैली, उद्देश्य तथा शीर्षक की सार्थकता आदि तत्त्वों का विवेचन किया है।

तृतीय अध्याय :- "शंकर शेष के "बंधन अपने-अपने" नाटक में चित्रित समस्याएँ"

प्रस्तुत अध्याय के अंतर्गत मैंने "बंधन अपने-अपने" नाटक में चित्रित अनेक समस्याओं का विवेचन किया है, जिसमें शिक्षा-व्यवस्था मे भ्रष्टाचार, सामाजिक भ्रष्टाचार, राजनीतिक समस्या, विवाह की समस्या, प्रेम की समस्या तथा अंतर द्वंद्व की समस्या आदि समस्याओं का विवेचन किया है।

चतुर्थ अध्याय :- "शंकर शेष के "बंधन अपने-अपने" नाटक की प्रायोगिकता"

प्रस्तुत अध्याय के अंतर्गत रंगमंच, हिंदी नाटक साहित्य में शंकर शेष का स्थान तथा प्रायोगिकता आदि का विवेचन करने के उपरांत नाटक का साहित्यिक तत्त्वों के आधारपर प्रायोगिकता का विवेचन किया है। उसमें कथावस्तु, पात्र, कथोपकथन, देश-काल-वातावरण, भाषाशैली, शीर्षक, अभिनयेता, रंगमंच योजना और नाटक का मंचीय प्रयोग आदि का प्रायोगिकता की दृष्टि से विवेचन किया है।

उपसंहार :-

सभी अध्यायों के विवेचन के उपरांत मैंने उपसंहार में अपना निष्कर्ष प्रस्तुत किया है जो नाटक के पूरे अध्ययन का सार है। अंत में मैंने "संदर्भ ग्रंथ-सूची" दी है।

मेरी इस लघु शोध-प्रबंध की मौलिकताएँ निम्नलिखित हैं -

[१] संपूर्ण विवेचन उपलब्ध सामग्री तथा प्रत्यक्ष अध्ययन पर आधारित है।

[२] आधुनिक शिक्षा-व्यवस्था में चल रही कुप्रथाएँ तथा भ्रष्टाचार पर प्रकाश डाला गया है।

[३] किताबों की दुनिया से बढ़कर और एक दुनिया है, जिसका हमें विचार करना चाहिए।

[४] प्रस्तुत नाटक के प्रमुख पात्रों के चारित्रिक विशेषताओं को स्पष्ट करना।

- ऋण निर्देश -

प्रस्तुत लघु शोध-प्रबंध की पूर्ति का श्रेय मैं श्रद्धेय गुरुवर्य प्राचार्य डॉ. आनंद वास्करजी को देना ही श्रेयस्कर मानता हूँ। अपनी कार्य व्यस्तता के बावजूद आपने पग-पग पर मेरे लेखन की त्रुटियों को दूर करके मुझे सही दिशा में निर्देशन किया। आपके उदार एवं आत्मीय मार्गदर्शन से ही मैं इस शोध-कार्य की अंतीम मंजिल तक पहुँच सका हूँ। आपके प्रति अपनी कृतज्ञता शब्दों में प्रकट करना मेरे लिए संभव नहीं है। आपकी प्रेरणा, स्नेह और आशीर्वाद का मैं निरंतर अभिलाषी हूँ। डॉ. [सौ.] पुष्पा वास्करजी ने भी मुझे समय-समय पर सही दिशा दिखाकर इस शोध-कार्य को पूर्ण करने की प्रेरणा दी। इस मार्गदर्शन के लिए मैं आपका कृतज्ञ हूँ।

शिवाजी विश्वविद्यालय के हिंदी विभागाध्यक्ष श्रद्धेय डॉ. पी.एस. पाटीलजी तथा श्रद्धेय डॉ. अर्जुन चव्हाणजी के सहयोग एवं मार्गदर्शन के लिए मैं कृतज्ञ हूँ।

इस शोध-कार्य को संपन्न बनाने में डॉ. डी.के. गोटूरी [डॉ. घाळी कॉलेज, गडहिंग्लज], डॉ. आर.जी. देसाई [श्रीमती मथुबाई गरवारे कन्या महाविद्यालय, सांगली], डॉ. के.आर. पाटील [शिवराज महाविद्यालय, गडहिंग्लज], प्रा. आय.आर. मोरे [भोगावती महाविद्यालय, कुरुकली] तथा डॉ. वसंत मोरे [महासचिव, दक्षिण भारत हिंदी परिषद] आदि गुरुजनों के सहयोग एवं मार्गदर्शन के प्रति मैं कृतज्ञ हूँ।

शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर के बॅ. बाळसाहेब खर्डेकर ग्रंथालय के ग्रंथपाल तथा आचार्य आवडेकर शिक्षणशास्त्र महाविद्यालय, गारगोटी के ग्रंथपाल एवं संबंधित कर्मचारी आदि के प्रति मैं आभार प्रकट करता हूँ।

मेरे परमपूज्य माता-पिता तथा मौसी के आशीर्वादों के बल पर ही मैं इस कार्य में सफल हो सका हूँ। उनके आशीर्वाद से ही कष्टों का सामना करते हुये मैं जीवन में आगे बढ़ रहा हूँ। उनके चरणों में मेरा यह संकल्प सादर अर्पित है।

यह लघु शोध-प्रबंध पूर्ण करने में मेरे भाई सिकंदर तथा इस्माईल मकानदार का काफी सहयोग एवं मार्गदर्शन रहा। उनके प्रति भी मैं कृतज्ञ हूँ।

यह लघु शोध-प्रबंध पूर्ण करने में श्रद्धेय डॉ. एस.जी. पाटीलजी [गणेश हॉस्पिटल, परिते] का काफी सहयोग एवं मार्गदर्शन रहा है, तथा "गणेश हॉस्पिटल" के सभी कर्मचारियों का भी योगदान रहा, उनके प्रति मैं आभार प्रकट करता हूँ।

इस लघु शोध-प्रबंध का टंकन श्री सुधाकर भोसले ने बड़ी लगन से किया है। अत: मैं उनका हृदय से आभारी हूँ।

इस कार्य को संपन्न बनाने में मेरे मित्र परिवार में किरण पाटोळे, मोहन सावंत, फिरोज तलवार, अस्मा गंभिरे, डॉ. मधुकर पाटील, सुभाष पाटील, आदेश चव्हाण, भारत कुचेकर, सुरेश मिठारी तथा बी.एस.गोरांबेकर आदि ने मुझे प्रोत्साहन एवं सहयोग दिया। अत: मैं उनके प्रति कृतज्ञ हूँ।

प्रत्यक्ष लघु शोध-प्रबंध को संपन्न बनाने में जिनसे भी प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप में प्रोत्साहन एवं सहयोग प्राप्त हुआ है, उन सभी के प्रति मैं हृदय से कृतज्ञ हूँ।

मैं उन कृतिकारों और विद्वानों के प्रति कृतज्ञ हूँ जिनकी सृजनात्मक और वैचारिक रचनाओं का उपयोग मैंने इस शोध-कार्य में किया है।

इस कृतज्ञता ज्ञापन के साथ मैं अपना यह लघु शोध-प्रबंध अत्यंत विनम्रता के साथ पाठकों तथा विद्वानों के सामने परीक्षणार्थ प्रस्तुत करता हूँ।

कोल्हापुर।

शोध-छात्र,

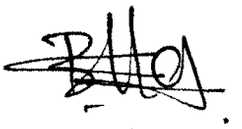

तिथि : 14.09.1996

[श्री कलंदर बाबू मुल्ला]

.....